ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे   निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26   अंकः 61   बुलेटिन अवधिः 9–13 अगस्त, 2017   दिनः मंगलवार   दिनाँकः 08 अगस्त, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	09–08–2017	10–08–2017	11–08–2017	12–08–2017	13–08–2017
वर्षा (मिमी0)	20	20	40	40	25
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	32	32	31	30	31
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	25	25	26	26	25
बादल आच्छादन	घने बादल	पूर्णतः बादल	पूर्णतः बादल	पूर्णतः बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	95	95	95	95	95
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	65	65	65	65	65
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	014	008	008	008	008
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व

आगामी 9 से 13 अगस्त तक मध्यम से भारी वर्षा होने तथा आसमान में घने से पूर्णतः बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधषाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**1 से 7 अगस्त,** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में घने से पूर्णतः बादल छाये रहे तथा 145.1 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 28.6 से 35.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 25.0 से 27.6 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 86 से 93 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 60 से 89 प्रतिशत एवं हवा 2.8 से 11.7 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम व पूर्व–दक्षिण–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

❖ मक्का की बिलम्ब दशा में बुवाई अगस्त के प्रथम सप्ताह तक करें। इस समय अल्पकालीन संकुल किस्में – कंचन, गौरव, सूर्या, प्रकाश आदि प्रयोग करें।

❖ मक्का एवं सोयाबीन की फसल में दो निराई–गुड़ाई बुवाई के 20 तथा 35 दिन पर करें।

❖ मक्के में तना बेधक का प्रकोप होने पर कार्बोफ्यूरोन 3 सीजी, 33 किग्रा/हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

❖ जिल क्षेत्रों में जल भराव की समस्या ना हो वहां दलहनी फसलों जैसे उर्द एवं मूंग की बुवाई इस सप्ताह में करें। उर्द की प्रजातियां पंत उर्द–19, पंत उर्द–35, पंत उर्द–31 तथा मूंग की पंत मूंग–4, पंत मूंग–5 का चुनाव करें।

❖ खरीफ चारा फसलों जैसे ज्वार, लोबिया, मक्का, बाजरा, ग्वार आदि की बुवाई 15 अगस्त तक अवश्य पूरा कर लें।

❖ अगस्त के प्रथम पखवाड़े में जमीन से 1.5 से 2 फीट की ऊंचाई पर प्रत्येक कतार के 5–6 गन्नों को एक साथ सूखी पत्तियों से बंधाई करें। इससे अधिक वर्षा एवं तेज हवाओं के कारण गन्ना गिरता नहीं है।

❖ गन्ने की फसल में जल भराव वाले खेतों में जल निकास की व्यवस्था करें।

❖ यदि धान की फसल में चौड़ी पत्ती वाले एवं मोथा वर्ग के खरपतवारों की बहुता हो तो 2,4–डी ईस्टर 36 ईसी की 1.25 लीटर अथवा अलमिक्स 20 प्रतिशत के 20 ग्राम का छिड़काव प्रति हैक्टेयर रोपाई के 20 दिन बाद करें।

❖ यदि खेत में सकरी एवं चौड़ी पत्ती वाले दोनों तरह के खरपतवार हों तो रोपाई के 15–20 दिन के अन्दर बिसपायरीबैक सोडियम 10 ईसी के 200 मिली /हैक्टेयर दवा का छिड़काव करें। इस बात का ध्यान रखें कि खेत में भरपूर नमी हो।

❖ दलहनी फसलो की बुवाई से पूर्व बीज को टाइकोडर्मा नामक बायोऐजेन्ट द्वारा 6–10 ग्रा0 प्रति किग्रा0 बीज की दर से उपचारित करने के बाद बुवाई करे। बायोऐजेन्ट उपलब्ध न होने की दशा में थीरम 2 ग्रा0, कार्बेन्डाजिम 1ग्रा0 प्रति किग्रा0 बीज की दर से उचारित करने के बाद बुवाई करें।

❖ धान में तना वेधक व पत्ति मरोड़क का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रनिलिप्रोल 0.4 जी को 10000 ग्राम/है0 या फिप्रोनिल 0.3 जीआर 25000 ग्राम/है0 या कारटाप 4 जीआर 18750 ग्राम /है0 की दर से छिड़काव रोपाई से 50 दिन के अन्दर करें।

❖ मक्का में जहॉ तना बेधक का प्रकोप होता है। बुवाई के समय कार्बोफयूरॉन 3सी0जी0 33 किग्रा0/है0 की दर से मृदा मे डालें।

❖ गन्ना में काला बग का प्रकोप हो तो क्लारपाइरीफॉस 20 ई0 सी0 के 2.0 ली0 /है0 या फेन्थोएट 50 ई0 सी0 के 1.0 ली0/है0 या क्यूनसलफॉस 25 ई0 सी0 के 2.0 ली0 को 500 ली0 पानी में घोल कर छिड़काव करे।

❖ कीटनाशी का छिड़काव बारिश न होने पर ही करें।

उद्यान प्रबन्धः

❖ अगस्त के प्रथम पखवाड़े में आम की गुठली बोने का कार्य जारी रखे। एक वर्ष पुराने बीजू पौधो को कलम बॉधने से पहले अन्य स्थान पर लगाऐ तथा ग्राफ्टिंग कार्य जारी रखे।

❖ नये बाग लगाऐ।

❖ देर से पकने वाली किस्मों के लिए बाग में यौन गंध वाली बोतलों के फैरोमोन ट्रैप (मिथाइल युजिनान एवं मैलाथियान) को बदल दें तथा एकत्रित मक्खियों को निकाल कर फेक देना चाहिए।

❖ बागों से वर्षा का पानी निकालने के लिए उचित व्यवस्था करें।

❖ आम की पछेती किस्मों के फलों की तुड़ाई प्रारम्भ करें।

❖ आम की अगेती किस्म मे जिन वृक्षों में फल तोड़ लिए गए है 1/2 कि0ग्रा0 नत्रजन की अतिरिक्त मात्रा दे।

❖ नये बागों में ढैचा व अन्तः सस्यन वाली फसलों की बुवाई करें।

❖ पुराने बागों के जिस स्थान पर पौधें मर गए है नये पौधों का रोपण करें।

❖ इस माह में मिर्च की रोपाई मेंड़ों पर करें, मेड़ों पर इसकी दूरी कतार से कतार 50 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 50 सेमी रखें एवं जल निकास की उचित व्यवस्था करें, क्योंकि खेत में 24 घण्टे में पानी रहने से फसल सूख जाती है।

- ❖ फूलगोभी की अगैती फसल में जल निकास की व्यवस्था करें तथा निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल दें। पौधशाला में गोभी की पौध तैयार हो गई हो तो उनकी रोपाई कतार से कतार 45 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी में करें।
- ❖ कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियो पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियो को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फॅफूदी की बढ़वार दिखाई दे तो नियत्रंण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर की पत्तियां काले पड़ने और फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सड़ने की समस्या से निदान हेतु कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ मुर्गी पालन के उत्पादन में अधिक से अधिक लाभ हेतु मुर्गियो का समय से टीकाकरण करवायें।
- ❖ यदि पशुओं को जुएं या चीचड़ लग गये हो तो उन पर सुमिथियोन 1 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- ❖ पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके यूटरोटाने/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।
- ❖ पशुओं को बारिश का पानी नहीं पिलाना चाहिए।
- ❖ पशुओ को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- ❖ अगस्त महीना गाय/भैंसों की ब्याने का समय होता है अतः प्रसव प्रकोष्ठ को साफ–सुथरा करके इस्तेमाल हेतु तैयार रखें।
- ❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- ❖ मानसून के प्रारम्भ में अचानक तेज धूप व तेज वर्षा से पशुओं को बचायें क्योंकि इसकी वजह से त्वचा में जलन जैसा विकार उत्पन्न हो जाता है।
- ❖ इस ऋतुओं में कृमियों का प्रकोप बढ़ जाता है और इससे बचने के लिए कृमिनाशक का उपयोग निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह से करें।
- ❖ ज्यादा हरे चारे से घोड़ों में केलिक होने का खतरा रहता है अतः इससे बचें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर